Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. XI, Issue No. XXI, Apr-2016, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

शैक्षिक मानववादी तत्वों का विश्लेषण एक दर्पण भारतीय शिक्षा दर्शन में परम्परागत विचार

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XI, Issue No. XXI, April-2016, ISSN 2230-7540

शैक्षिक मानववादी तत्वों का विश्लेषण एक दर्पण भारतीय शिक्षा दर्शन में परम्परागत विचार

Anjali Verma[1]* Chak Lal Verma[2]

[1]North East Frantier Technical University

[2]North East Frantier Technical University

----------X----------

प्रस्तावनाः

यह कहना उचित होगा कि हर दर्शन पर उस परम्परा की अमित छाप होती है जिसमें वह जन्म लेता है। यही कारण है कि ब्रिटिश दर्शन सामान्यतः आनुभविक है तथा अमेरिका का दर्शन वास्तववादी तथा उपयोगितावादी है। फ्रांस का दर्शन सामान्यतः बुद्धिवादी है तो जर्मनी का दर्शन परिकल्पनात्मक है। इस दृष्टिकोण से भारतीय दर्शन को ध्यान शक्तियों पर ध्यान केन्द्रित कर चिन्तन करता है। साधारणतः भारतीय दर्शन को आध्यात्मिक कहा जाता है। ऐसा कहने का तात्पर्य यही है कि इसमें वैसे मूल्यों पर बल दिया जाता है जो परात्मूलक तथा पारलौकित है। परन्तु भारतीय दर्शन की यह व्याख्या से सांसारिक मूल्यों की सर्वक्षा होती है। कम से कम समकालीन भारतीय दर्शन के सम्बन्ध में ऐसा कहना बिल्कुल ही अनुचित होगा। इतना जरूर कहा जा सकता है कि प्राचीन भारतीय दर्शन जीवन सम्बन्धी एक निराशापूर्ण दृष्टि पर आघृत रहा है। इसका विश्वास रहा है कि जीवन का अर्क दुःख है, तथा धर्म एवं दर्शन का लक्ष्य इस दुःख से मुक्ति पाना है।

1. समकालीन भारतीय दार्शनिकों में कुछ बातें जिसपे सभी एकमत नजर आते हैं –

1. एकवाद, जगत की वास्तविकता, मानव का संगठित स्वरूप, मनुष्यत्व की गरिमा, मानव स्वतंत्रता की वास्तविकता, अर्न्तदृष्टि का महत्व आदि।

2. स्वामी विवेकानन्द, सर्वपल्ली राधाकृष्णन, महात्मा गाँधी, श्री अरविन्द तथा रविन्द्र नाथ टैगोर जैसे सभी विचारकों की तात्विक दृष्टि एकवादी है।

3. इसी प्रकार इन सबों ने जगत की वास्तविकता को स्वीकारा है तथा मनुष्य की गरिमा पर बल दिया है।

4. वे सभी स्वीकारते हैं कि जीवन के आदर्श की प्राप्ति इस सीमित जीवन के परी जाने में है।

पुनः वे सभी इस विचार में भी सहमत हैं कि सत् का यर्थाथ ज्ञान किसी अर्न्तदृष्टि से ही सम्भव है। इस प्रकार हम देखते हैं कि समकालीन भारतीय चिन्तकों का विश्वास है कि दर्शन जीवन के साथ अनिवार्य रूप में बंधा हुआ है।

2. समकालीन भारतीय दार्शनिकों की सबसे बड़ी विशेषता–

1. ये सभी किसी न किसी रूप में मानववादी है।

2. अपने न्यूनतम अर्थ में मानवाद का कहना है कि कोई भी विचार या व्याख्या मानव से असम्बद्ध रह ही नहीं सकता यह एक स्पष्ट सत्य है तथा इसके सम्बन्ध में कोई मतभेद सम्भव ही नहीं है।

3. मानववाद : अर्थ एवं स्वरूप–

1. अंग्रेजी शब्द भ्नउंदपेउ की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द 'हीमो' से हुई है। जिसका शाब्दिक अर्थ है 'मानव'। इस प्रकार शाब्दिक अर्थ में मानववाद से तात्पर्य मानव केन्द्रित दर्शन है।

2. प्रोटेगोरस ने कहा था **"मनुष्य सभी वस्तुओं का मानदण्ड है।"** शीलर के अनुसार–मानवीय सत्य ही अन्तिम लक्ष्य है।

3. मानववादी दर्शन के केन्द्र–बिन्दु में मनुष्य मात्र की समस्यायें अवस्थित है। मुख्य रूप से मानव मात्र की समस्याओं को अपने दर्शन का केन्द्र बिन्दु बनाकर उदित हुए विचार एवं दृष्टिकोण को ही 'मानवाद' की संज्ञा दी गयी है।

4. 'आक्सफोर्ड डिक्शनरी' के अनुसार– **"मानववाद ईश्वर से सम्बन्धित न होकर मनुष्य के हितों से सम्बन्धित है।"**

5. 'इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' में मानवाद का परिचय इस प्रकार दिया गया है – चिन्तन की वह पद्धति जो मूलतः मनुष्य को तथा उसकी सामर्थ्यों,

www.ignited.in

जीवन–व्यापारों, ऐच्छिक महत्वाकांक्षाओं तथा उसकी कुषल क्षेम को महत्व प्रदान करती है।

4. मानववादी दर्श की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि–

दार्शनिक परम्परा के प्रारम्भ से ही दर्शन में मानववादी दृष्टिकोण किसी न किसी रूप में विद्यमान रहा है। रूफस जोंस ने अपनी पुस्तक 'न्यू स्टडीज इन मिथिकल रिलीजन' (1927) में कन्फ्यूशियस के मत को उद्धत करते हुए लिखा है कि "हमारी नैतिक सत्ता समस्त सत् पदार्थों की वास्तविक है और नैतिक व्यवस्था संसार की उचित रीति से रक्षा करना ही सर्वोच्च अच्छाई है।"

5. मानववादी दशन का ऐतिहासिक वर्णन भारतीय विचार धारा–

1. **भारतीय विचार धारा**–यह स्पष्ट है कि भारतीय मानववाद युग–युग से सतत् पल्लवित होता आ रहा है। इसके विकास में प्राचीन दार्शनिक, ऋषियों, संन्तों, साहित्यकारों तथा समाज सुधारकों आदि का योगदान सर्वविदित है। संक्षेप में, भारतीय मानवाद में मानवीय चेतना और उसके उद्धत गुणों पर विशेष बल दिया गया है।

6. विवेकानन्द–

विवेकानन्द का जन्म कलकत्ता के एक सम्पन्न परिवार मे 12 जनवरी, 1863 में हुआ था। उनके शैशव काल में कोई ऐसी महत्वपूर्ण घटना तो नहीं घटी थी जिसका प्रभाव पूर्ण जीवन पर अमिट बना रहता। किन्तु, उनकी प्रारम्भिक शिक्षा के विषय में यह कहा जा सकता है कि एक दृष्टि से वह सर्वांगीण–शिक्षा थी। उनका ध्यान जिस ढंग से मानसिक एवं वैचारिक प्रगति की ओर रहा।

किन्तु 1808 में स्वामी रामकृ"ण परमहंस से उनकी भेंट हुई, और इस भेंट के फलस्वरूप उनके जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। 1886 में स्वामी रामकृष्ण परमहंस के निधन के बाद उन्होंने अपने जीवन एवं कार्यों को नया मोड़ दिया। पहले तो उन्होंने सम्पूर्ण देश की विस्तृत यात्रा की, तथा इस प्रकार देश की वर्तमान सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त की। 4 जुलाई, 1902 को उनका निधन हुआ। जो प्राणी जितना ही निम्न स्तर का होगा उसे इन्द्रिय जनित सुख में उतना ही आनन्द मिलेगा।

शिक्षा के लक्ष्य एवं सिद्धान्त

1. शारीरिक विकास
2. मानसिक विकास
3. मानसिक एवं बौद्धिक विकास
4. समाज सेवा की भावना का विकास
5. नैतिक एवं चारित्रिक विकास

शिक्षा के सिद्धान्त

1. पुस्तको का अध्ययन ही शिक्षा नहीं है।
2. ज्ञान व्यक्ति के मन में विद्यमान है, वह स्वयं ही सिखाता है।
3. चित्त की एकाग्रता की शक्ति ज्ञान प्राप्त करने की कुन्जी है। इस शक्ति को विकसित करने के लिए ब्रह्मचर्य आवश्यक है।
4. मन, वचन तथा कर्म की शुद्धि आत्म नियंत्रण है।
5. शिक्षा बालक का शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास करे।

शिक्षा विधियाँ

1. अनुकरण विधि
2. व्याख्यान विधि
3. तर्क एवं विचार–विमर्श विधि
4. निर्देशन एवं परामर्श विधि
5. प्रदर्शन एवं प्रयोग विधि

अनुशासन

किसी भी व्यक्ति के उत्थान हेतु अनुशासन की महती आवश्यकता है। मनुष्य जीवन के मुख्य तीन पक्ष होते हैं– प्राकृतिक, सामाजिक और आध्यामिक।

शिक्षक

शिक्षक किसी भी समाज के आधारशिला होते हैं अच्छे शिक्षकों के द्वारा ही आदर्शवादी समाज की कल्पना साकार हो सकती है।

शिक्षार्थी

विवेकानन्द के अनुसार भौतिक एवं आध्यात्मिक किसी भी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षार्थी ब्रह्मचर्य का पालन करे।

विद्यालय

स्वामी जी गुरू गृह प्रणाली के हामी थे। परन्तु आधुनिक परिपेक्ष्य में यह जानते थे कि अब गुरू जन कोलाहल से दूर कहीं प्रकृति की सुरम्य गोद में स्थापित नहीं किये जा सकते।

शिक्षा के अन्य स्वरूप

1. जनसाधारण की शिक्षा
2. स्त्री शिक्षा
3. सह–शिक्षा
4. व्यावसायिक शिक्षा
5. धार्मिक शिक्षा

7. श्री अरविन्द–

अरविन्द घोष का जन्म पश्चिम बंगाल के कोनानगर में 15 अगस्त, 1872 में हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा दार्जिलिंग के लोरेटो कान्वेन्ट में हुयी। आठ वर्ष की उम्र मं ही उन्हें इंग्लैण्ड ले जाया गया। अपने विदेश–प्रवास के प्रारम्भिक चरण में उन्हें ड्रीवेट नाम के एक योग्य शिक्षक के संरक्षध्ण में रखा गया। स्कूल में उनकी अभिरूचि ग्रीक, लैटिन जैसी कुछ शास्त्रीय भाषाओं के प्रति तथा कुछ अन्य यूरोपीय भाषाओं के प्रति जागी। अपना अध्ययन समाप्त कर उन्होंने आई. सी. एस. की परीक्षा दी। वे लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण भी हो गये किन्तु घुड़सवारी में असफल रहे। उस दौरान शायद अफसरों के लिए घुड़सवारी का ज्ञान अनिवार्य रहा होगा। 1893 में वे भारत वापस आ गये। यहाँ वे बड़ौदा राज्य सेवा में नियुक्त हुए जहाँ प्राचीन भारतीय दर्शन के विस्तृत अध्ययन का समुचित समय तथा अवसर मिला।

किन्तु वे बड़ौदा के अपने जीवन से पूर्णतया संतुष्ट नहीं हुए तथा राजनैतिक कार्यों से जुड़ गए। बड़ौदा में श्री अरविन्द कोई दस वर्षों तक रहे, किन्तु उसके बाद वे पूर्ण रूप से राजनैतिक जीवन में प्रवेश कर गये। यह उनके जीवन का एक बड़ा संक्षिप्त काल रहा। श्री अरविन्द के वैयक्तिक प्रभाव आकर्षण तथा उनके वृहत विचारोत्पादक रचनाओं तथा लेखों के फलस्वरूप उनके आश्रम की ओर अनगिनत शिष्य अनुगामी होकर चले आये तथा वे लोग निष्ठा पूर्वक श्री अरविन्द के विचारों का प्रसार करते रहे। 5 दिसम्बर 1950 को उनका देहावसान हो गया, किन्तु उसके बाद भी सतत् इस आश्रम का प्रभाव बना रहा और अभी भी वह शिक्षा तथा आध्यात्मिक अनुशासन का एक विशिष्ट केन्द्र बना हुआ है।

1. प्राथमिक अथवा मौलिक अज्ञान
2. ब्रह्माझमूलक अज्ञान
3. अहम् केन्द्रित अज्ञान
4. सामयिक अज्ञान
5. मनोवैज्ञानिक अज्ञान

श्री अरविन्द का शिक्षा दर्शन

- ✓ शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जानी चाहिए।
- ✓ शिक्षा बालक प्रधान होनी चाहिए।
- ✓ शिक्षा बालक की मनोवृत्तियों तथा मनोवैज्ञानिक परिस्थियों के अनुसार होना चाहिए।
- ✓ शिक्षा को बालक में छिपी हुई शक्तियों एवं सम्भावनाओं को विकसित करना चाहिए।
- ✓ शिक्षा को बालक की शारीरिक शुद्धि का आधार बनना चाहिए।

1. शारीरिक विकास और शुद्धि
2. ज्ञानेद्रियों का विकास
3. मनसिक विकास
4. नैतिकता का विकास
5. अन्तःकरण का विकास

8. मोहनदास–

मोहनदास कर्मचन्द गाँधी का जन्म 2 अक्टूॅबर सन् 1869 ई० को काठियावाड़ के पोरबन्दर नामक नगर में हुआ। इनके पिता राजकोट रियासत के दीवान थे। 13 वर्ष की आयु में गाँधी जी का विवाह कस्तूरबा के साथ हुआ। उन्होंने सन् 1887 ई0 में एक साधारण छात्र की भांति हाईस्कूल की परीक्षा पास की। उसी वर्ष उन्हें कानून पढ़ने के लिए 4 सितम्बर को जलयान द्वारा इंग्लैण्ड भेज दिया गया जहाँ वे विद्यार्थी के रूप में 3 वर्ष और 9 माह तक रहे। 10 जून सन् 1891 ई0 को गाँधी जी ने वकालत की परीक्षा पास की और बैरिस्टर बनकर भारत लौट आये। अप्रैल सन् 1893 ई0 में गांधी जी कानूनी सलाहकार के रूप में दक्षिण अफ्रीका गये जहाँ उन्होंने भारतीयों पर किए जाने वाले अन्याय के विरूद्ध 20 वर्षों तक आवाज उठाते हुए अंग्रेजों के खिलाफ अहिंसात्मक लड़ाई का श्रीगणेश किया। अफ्रीका से लौटकर गाँधी जी ने सन् 1915 ई० में विदेशी 'ाासन का विरोध करते हुए भारतीय सवतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लेना प्रारम्भ कर दिया।

महात्मा गाँधी के अनुसार शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि

इस शिक्षा का उद्देश्य भारतीय जनता के हृदय तथा मन को पवित्र करके एक शोषण विहीन समाज की स्थापना करना था। इस दृष्टि से गाँधी जी एक महान शिक्षा–शास्त्री भी थे।

महात्मा गाँधी के अनुसार शिक्षा के लक्ष्य एवं सिद्धान्त

लक्ष्य–

1. शारीरिक विकास
2. मानसिक एवं बौद्धिक विकास
3. व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास
4. सांस्कृतिक विकास
5. नैतिक एवं चारित्रिक विकास

सिद्धान्त–

1. 7 से 14 वर्ष के बालकों की शिक्षा निःशुल्क तथा अनिवार्य होना चाहिए।
2. शिक्षा का माध्यम बालक की मातृ–भाषा होना चाहिए।
3. अंग्रेजी का बालक की शिक्षा में कोई स्थान नहीं होना चाहिए।
4. साक्षरता को शिक्षा नहीं कहा जा सकता।

5. शिक्षा को बालक में मानवीय गुणों का विकास करना चाहिए।

शिक्षा के प्रकार

1. जन–शिक्षा
2. स्त्री शिक्षा
3. सह–शिक्षा
4. व्यावसायिक शिक्षा
5. धर्म–शिक्षा

बेसिक शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्त

1. शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क बनाने का सिद्धान्त
2. शिक्षा को आत्म–निर्भर बनाने का सिद्धान्त
3. सत्य, अहिंसा और सर्वोदय का सिद्धान्त
4. शिक्षा को जीवन से जोड़ने का सिद्धान्त

बेसिक शिक्षा के गुण

1. आत्मनिर्भर योजना
2. मनुष्य के सर्वांगीण विकास पर बल
3. वास्तविक जीवन की तैयारी
4. वास्तविक जीवन की तैयारी

बेसिक शिक्षा के दोष–

1. अपूर्ण योजना
2. उच्च शिक्षा से सम्बन्ध का अभाव
3. नगरीय क्षेत्रों के लिए अनुपयुक्त

निष्कर्ष

विश्व में विशेषकर भारतीय उपमहाद्वीप में जनसंख्या विस्फोट हो रहा है। तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या में चारों ओर भीड़ दिखाई पड़ती है। अपनी निरंतर बढ़ती हुई उचित–अनुचित आवश्यकताओं को व्यक्ति येन–केन–प्रकारेण पूरा करने के प्रयास में अपने सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्व को भूलता जा रहा है। हम विज्ञान के क्षेत्र में आशातीत सफलता प्राप्त करके भी साधारण मनुष्य के जीवन को सुखमय नहीं बना पा रहे हैं। इस अंधकार में मानवतावादी दर्शन एक प्रकाशपुंज के रूप में दिखाई देता है जो मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाने का दावा करता है। वह मानव को केन्द्र में रखकर दर्शन का विकास करता है और शिक्षा के क्षेत्र में भी योगदान करने का दावा करता है। मानवतावाद का मानव चलता–फिरता नजर आ रहा है। मानवतावाद में मनुष्य कल्पनाओं में नहीं वाह्य जगत में अस्तित्ववान हैं। उसमें विचार आकांक्षा एवं भावनाऐं हैं। भारतीय मानवतावादी विचारकों ने गरीबों की सेवा करना, गरीबों के दुःख में दुखी होना, उनकी दीन–दशा का निवारण करना तथा आम आदमी के उत्थान को अपना सर्वोत्कृष्ट धर्म माना है। मानवतावाद के सम्बन्ध में अब तक के वर्णन ये यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह विचारधारा समाज तथा व्यक्ति के सम्बन्धों को नए दृष्टिकोण से देखती है। यह एक ऐसा दार्शनिक परिवर्तन है जो हाइटहेड के अनुसार सैकड़ों वर्षों में एकाध बार घटित होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(अ) हिन्दी माध्यम

1.	अग्रवाल, एस0 के	:	''शिक्षा के तात्विक सिद्धान्त'' राजेश पब्लिशिंग हाउस, मेरठ 1991–92
2.	अवस्थी, कमला शंकर	:	''निराला पत्रिका'' त्रैमासिक पत्रिका, निराला प्रकाशन, उन्नाव, जनवरी–मार्च 2005, वर्ष 04, अंक–13
3.	अस्थाना, बिपिन	:	''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, 1999
4.	अस्थाना, बिपिन	:	''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'' अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–7 (2008)
5.	आनन्द, एस0 पी0	:	''शिक्षक शिक्षा'' टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज क्लाइमेट इन्वेन्टरी 1992
6.	आनन्द, एस0 पी0	:	''इन द क्विस्ट ऑफ इफेक्टिवनेश ऑफ टीचर एजूकेशन इन्नोवेटिव एक्सपेरीमेन्ट्स एन्ड प्रेक्टिस इन एजूकेशन'' आर0सी0ई0 भुवनेश्वर, 1992
7.	आनन्द, एस0 पी0	:	''ट्रेन्डस एन्ड थॉटस इन एजूकेशन'' एनालिसिस ऑफ आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट ऑफ टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, 1994
8.	कपिल, एच0 के0	:	''अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में'' मॉडर्न प्रिन्टर्स, आगरा, 1998
9.	कपिल, एच0 के0	:	''अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में'' अर्चना प्रिन्टर्स, आगरा, 1992–93
10.	कपिल, एच0 के0	:	''सांख्यकी के मूल तत्व, सामाजिक विज्ञानों में'''' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2002

11.	कुमार, के0	:	''सोशल क्लाईमेट इन स्कूल करेक्टरस्टिक्स ऑफ प्यूपिल्स'' बरोड़ा, 1972
12.	मोहन, एल0 तथा मेनियन एल0	:	''रिचर्स मेथड इन एजूकेशन'' कम हेल्म, लन्दन, 1980
13.	गुप्ता, एस0 पी0 गुप्ता, अलका	:	''सांख्यिकीय विधियॉ'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद–2 (2009)
14.	गुप्ता, एस0 पी0	:	''उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद–2004
15.	गुप्ता, एस0 पी0	:	''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2005
16.	गुप्ता, रामबाबू	:	''शैक्षिक प्रशासन'' आलोक प्रकाशन, लखनऊ, 1999
17.	गैरिट, एच0 ई0	:	''सांख्यिकी के मूल तत्व'', विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, 1995
18.	पाठक, पी0 डी0	:	''भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1974
19.	पाठक, पी0 डी0	:	''शिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1982
20.	पाठक, त्यागी, पी0 डी0	:	''शिक्षा के सामान्य विद्धान्त'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1995

Corresponding Author

Anjali Verma*

North East Frantier Technical University

E-Mail –